© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

हिन्दी के प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका

डॉ0 ओरेन्द्र कुमार यादव
पूर्व शोध छात्र, हिन्दी विभाग,
वीर बहादूर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

जैसा कि यह सर्वविदित है, साहित्य समाज का दर्पण होता है, अर्थात् समाज में घटित घटनाओं का सीधा प्रभाव रचनाकार के उपर पड़ता है। वह उसे शब्द रूप देकर अभिव्यक्त करता है जैसे–जैसे समाज में नये–नये परिवर्तन होते रहते हैं उसी प्रकार रचनाकारों की रचनाएँ में भी।

हिन्दी को हमारे देश की राष्ट्रभाषा का दर्जा मिला हुआ है इसलिए इसमें विभिन्न चरणों में संशोधन कर इसकी कठिनाईयों को दूर करने का सफल प्रयास किया जाता रहा है। ताकि जन सामान्य वर्ग भी इसे आसानी से समझ सके व इसका उपयोग कर सके। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के लिए और मुद्रण हेतु यह संशोधन अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। एक व्यक्ति अपने मन में उत्पन्न उद्गारों व विचारों को अपनी मातृभाषा में जितनी सहजता से व्यक्त कर सकता है उतना अन्य किसी भाषा में नहीं।

हिन्दी गद्य साहित्य के जनक भारेतन्दु हरिश्चन्द जी ने भी मातृ भाषा पर जोर देते हुए कहा है कि–

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

स्वतन्त्रता से पूर्व भारतवर्ष अंग्रेजों के चंगुल में फसा था। प्रत्येक भारतवासी पराधिनता में जीवन यापन कर रहा था। सरकारी व गैर सरकारी कार्य अंग्रेजी में ही हो रहे थे। हिन्दी को धीरे–धीरे दरकिनार किया जाने लगा। पेश की युवा पीढ़ी की नौकरी की लालच में हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी पर ज्यादा जोर देने लगे। भारतीय सभ्यता और संस्कृति को छोड़ पाश्चात्य शिक्षा पर जोर देने लगे।

आजादी मिलने के बाद स्थिति में परिवर्तन हुआ। एक विस्तृत एवं व्यापक संविधान का निर्माण हुआ। संविधान निर्माण करने वाले सदस्यों के सामने यह प्रश्न उठा कि देश की राष्ट्रभाषा कौन सी हो। क्यों कि राष्ट्र भाषा ही राष्ट्रीयता के विकास में सहायक होती है।

उस समय से लेकर आज तक भारत में जितनी संख्या हिन्दी बोलने वालों की है उतनी अन्य किसी प्रान्तीय भाषा के नहीं हैं। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है जो एक वैज्ञानिक लिपि है। इसमें हर ध्वनि के लिए अलग–अलग वर्ण या चिन्ह है।

देश ही नहीं वरन् पूरे विश्व में मीडिया और सोशल मीडिया का प्रभाव तेजी से बढ़ा है। इसे ध्यान में रखते हुए भाषा सुधार समिति ने आवश्यक सुधार किये। जिससे हिन्दी को सरल एवं सहज बनाया जा सके। क्योंकि हिन्दी के प्रचार–प्रसार में मीडिया सोशाल मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। चाहे वह दूरदर्शन हो, समाचार पत्र हो, आकाशवाणी हो, पत्रिकाएँ हो सिनेमा हो, फेसबुक हो, व्हाट्सएप, हो ट्यूटर हो, आरकुट हो या इंस्टाग्राम हो।

सोशल मीडिया में हिन्दी का प्रयोग वर्तमान समय में बढ़ा है। एक समय था जब मीडिया में केवल दो प्रकार थे प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया प्रचलित थे। धीरे–धीरे इंटरनेट का उद्भव हुआ तो उसने अपने तरीके से समाज को प्रभावित करना शुरू किया। रेडियों ने हिन्दी की पहचान बढ़ायी तो वही सिनेमा ने इसकी लोकप्रियता में चार चाँद लगायें। टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम से अहिन्दी भाषी लोगों को हिन्दी सिखने के लिए प्रेरित किया। टी0वी0 पर प्रसारित होने वाला कार्यक्रम ''कौन बनेगा करोड़पति'' अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ। इस कार्यक्रम की वजह से कितने अहिन्दी भाषी लोग हिन्दी सिखे और अच्छा परिणाम प्राप्त हुआ।

नये–नये रचनाकारों के लिए सोशल मीडिया एक अच्छा प्लेटफार्म साबित हो रहा है। ये रचनाकार अपनी मौलिक रचनाओं को फेसबुक और व्हाट्सप के माध्यम से जन सामान्य तक पहुँचा रहे हैं, तथा लोगों की प्रतिक्रिया व समीक्षा भी प्राप्त कर रहे हैं। उनकी प्रतिभा निखार में सोशल मीडिया 'मील का पत्थर' साबित हो रही है। बिहार राज्य की दो लड़किया मैथिली ठाकुर एवं नेहा सिंह राठौर फेसबुक के माध्यम से ही अपनी कला का प्रदर्शन कर ख्याति प्राप्त कर रही है।

ट्यूटर जैसी साइट जहाँ शब्दों की सीमा निर्धारित है, ऐसे में अपनी बातों एवं भावों को शब्द सीमा में बांधने से लेखन कौशल का विकास हो रहा है। मूल भावों को अंकित करने की सीख भी प्राप्त हो रही है। ट्यूटर की भाषा की सरल एवं स्पष्टवादी हो। उसमें शिष्टता एवं मर्यादा का बोध होना चाहिए।

व्हाट्सएप के जरिये नये–नये साहित्यकार, रचनाकार व साहित्यानुरागी लोग अपना समूह बनाकर अपनी–अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं। एक दूसरे की कृतियों को पढ़ना तथा आवश्यकतानुसार

प्रतिक्रिया भी देते रहते हैं। अच्छी रचनाएँ लोगों तक पहुँचने पर सराही जाती है तथा अत्यधिक लोगों द्वारा पसंद किये जाने पर पुरस्कार के लिए नामित भी किया जाता है।

यूट्यूब एक ऐसा माध्यम है कि जो देश के कोने–कोने तक व्याप्त है इसमें हिन्दी से जुड़ी हर समस्या का समाधान उपलब्ध रहता है।

14 सितम्बर हिन्दी दिवस पर सोशल मीडिया में इतना अत्यधिक कार्यक्रमों को साझा किया जाता है कि इसकी लोक प्रियता दिनों दिन बढ़ रही है। एक दूसरे तक आवश्यक जानकारी आदान प्रदान किया जाता है। वर्तमान में अपने विचारों या भावों को आम जन तक पहुँचाने में सोशल मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इंटरनेट के माध्यम से एक व्यक्ति दूर किसी दूसरे व्यक्ति से जुड़ जाता है। सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है जो सारे विश्व को एक सूत्र में बाधता है। यह विश्व का सुगम एवं सस्ता माध्यम है जो तीव्र गति से सूचनाओं का आदान–प्रदान करता है।

जैसा कि आमतौर पर देखा गया है कि फेसबुक ने सम्पूर्ण साहित्य जगत् को ही एक मंच पर ला दिया है। आज सोशल मीडिया के द्वारा लेखक, कवि अपने पाठकों से इतना नजदीक पहुँच गये कि हाथों–हाथ प्रति उत्तर प्राप्त कर रहे हैं। पाठकों, साहित्यकारों, संपादकों तथा प्रकाशकों की आपसी दूरी कम हुयी है। निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि हिन्दी के प्रचार प्रसार में सोशल मीडिया अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

सन्दर्भ :

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ''हिन्दी साहित्य का इतिहास लोक भारती प्रकाशन, संस्करण–2009
2. डॉ0 नगेन्द्र, ''हिन्दी साहित्य का इतिहास संस्करण–2014
3. रंजना सक्सेना, 'हिन्दी पत्रकारिता के सामने चुनौतिया, 1992
4. आचार्य रामचन्द्र तिवारी, 'हिन्दी का गद्य साहित्य'– विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, अष्टम संस्करण, 2012
5. 'आजकल' पत्रिका अंक–सितम्बर–2013
6. डॉ0 भोलानाथ तिवारी, 'भाषा विज्ञान, प्रकाशन, किताब महल, प्रयागराज, 2005